RESEARCH PAPER | Commerce | Volume : 3 | Issue : 6 | June 2013 | ISSN - 2249-555X

कृषको के आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ का योगदान

Krushiko Ke Aarthik Vikas Me Chhattisgadh Rajya Sahkari Vipnan Sangh Ka Yogdan

KEYWORDS: छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ, कृषि साख सहकारी समितिया, विपणन, समर्थन मूल्य, कृषि आदान, लघु एंव सीमांत कृषक शोध अध्ययन के उद्देश्य

Dr. Harjindar Pal Singh Saluja	Dharmender Singh	Dr. Ravish Kumar Soni	Dr. Harjeet Signh Bhatia
Professor (Commerce), Govt. V. Y.T. Auto, PG College Durg, Chhattisgarh, India.	Asst. Professor(Commerce) Govt R.R.D.S. college khairagarh, Chhattisgarh, India.	Asst. Professor (Commerce) Kalyan Post Graduate College, Bhilai nagar, Chhattisgarh, India.	Professor (Commerce) Govt. Digvijay College Rajnangoan, Chhattisgarh, India

ABSTRACT छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 के अधीन छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित रायपुर दिनांक 01-11-2000 को अस्तित्व में आया। जो पंजीयक ,सहकारी संस्थाएं द्वारा पंजीकृत है इसका प्रमुख उद्देश्य सहकारी समितियों को संगठित कर प्रदेश के लघु एवं सीमांत कृषको को उनके आर्थिक विकास, समृद्धि एवं कृषि के विपुल उत्पादन के लिए जरूरत-मंद कृषकों को आवश्यक कृषि आदान उपलब्ध करना है साथ ही उत्पादित कृषि उपज की मूल्य संग्रहण व्यवस्था कर कृषको की उपज को समर्थन मुल्य में उपार्जित कर कृषि उपज का सही मूल्य दिलाना जिससे कृषक बिचौलियों एवं व्यापारियों के शोषण से बच सके। छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य के
कृषकों के लिए सहकारी प्रदान करता है उन्हें सबसे अच्छी गुणवत्ता के बीज ,खाद एवं कृषि उपकरण उपलब्ध कराता है तथा कृषक अपनी आवश्यकता के अनुसार क्रय कर सके जिससे कृषक का विकास हो तथा वे साहूकारो के चुंगल से बच सके तथा वे सरलता से कृषि कार्य कर सके।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- छत्तीसगढ़ राज्य में सहकारी विपणन संघ की भूमिका का अध्ययन
- छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ की वर्तमान स्थिति का अध्ययन
- छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ से कृषको पर प्रभावो अध्ययन
- उपज में वृद्धि हेतु खाद एवं बीज के वितरण व्यवस्था का अध्ययन
- कृषि उपज की उत्तम बिक्री व्यवस्था का

अध्ययन

परिकल्पना -

छत्तीसगढ़ राज्य कृषि प्रधान प्रदेश है। जो धान का काटोरा कहलाता है। यहाँ लगभग 75: जंनसख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। राज्य के अधिकांश कृषक लघु व सीमांत है कृषक है जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर है तथा समय पर कृषि आदान उपलब्ध नही होता व कृषि उपज का उचित मूल्य नही प्राप्त कर पाते है। यह परिकल्पना की गयी है कि छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ से छ.ग. के कृषकों की समस्यों का समाधान हो रहा है।

अध्ययन का क्षेत्र -

चूँकि अध्ययन छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ के कार्यो पर आधारित है अतः अध्ययन के उद्देश्यो की पुर्ति हेतु पुरे छ.ग. को शामिल किया गया ळें

अध्ययन की अवधि -

शोध अध्ययन हेतु छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ के 2007-08 से 2010-11 तक के आकड़ो का संग्रहण किया गया है।

अध्ययन की सीमांए

1. अनुसंधान कार्य के पहले ओर महत्तवपूर्ण समस्या आकड़ो का एकत्रीकरण करना व संग्रह करना जो कि अत्यधिक समय व श्रम साध्य कार्य है जिसकी लागत भी अधिक आती है।
2. चूकि छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ, सरकार के नियंत्रण के अधीन एक सह. कारी संगठन है। जिससे आकड़ो को प्राप्त करना आसान कार्य नही है। तथा संघ के सदस्य जानकारी प्रदान करने में आनाकानी करते है।

अध्ययन का महत्व -

छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ के कियाकलापो से छ.ग. के कषको का आर्थिक समृद्धि कृषि विकास के साथ ग्रामीण विकास में योगदान का अध्ययन करना व कार्य प्रणाली में सुधार हेतु किये जाने वाले उपायो पर प्रकाष डालना. अध्ययन हेतु आकड़ो का सग्रहण विपणन संघ से प्राप्त किये आकड़ो तथा समय-समय पर पत्र पत्रिकाओ व लेख वेबसाइट पर सार्वजनिक/प्रकाशित की गई सुचना, विपणन संघ के वार्षिक प्रतिवेदन एवं छ.ग. शासन द्वारा जारी की गई सुचनाओ के अध्ययन से किया गया है।

विपणन संघ का गठन -

विपणन संघ का गठन 30.10.2000 को हुआ तथा यह 1.11.2000 को अस्तित्व में आया।

विपणन संघ के उद्देश्य -

1. कृषि के विकास में योगदान देना।
2. कृषि उपज का समर्थन मुल्य पर क्य करना।
3. कृषको को शोषण से मुक्त कराना।
4. कृषि आदान (खाद बीज) आदि समय पर उपलब्ध कराना।
5. कृषि उपकरण उपलब्ध कराना।

विपणन संघ की सरचना -

विपणन संघ एक शीर्ष सोसायटी है तथा इसके सदस्य निम्नानुसार है।

1. प्राथमिक विपणन एव प्रकिया समितिया- 113
2. लैम्पस - 276
3. अन्य समितिया - 11
4. राज्य शासन - 01

संघ की कार्य प्रणाली -

संघ का मुख्य कार्य कृषि आदान सही समय व कीमत पर उपलब्ध कराना है तथा कृषि उपज का समर्थन मुल्य पर संग्रहण कर कृषको को शोषण से बचाना है। इसके लिये संघ प्रदेश मे 1333 प्राथमिक सहकारी समितियों के माध्यम से किसानो को खाद व बीज व अन्य कृषि आदान उपलब्ध कराने की व्यवस्था करता है तथा समितियों के माध्यम से किसानो की उपज सरकार द्वारा निर्धारित समर्थन मुल्य पर खरीदने की व्यवस्था करवाता है।

प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियां Primary Agricalture cooperative society (Pacs) -

सहकारी समितियां समानता की भावना पर आधारित होती है। पूंजी, धर्म, राजनीति, जाति सामाजिक स्तर आदि किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। इन समितियो में सं. स्था के सदस्य अपने कार्यो का प्रबंध व संचालन स्वयं करते है। यहा तक कि संगठन अपने सेवा कार्यो हेतु वितीय संसाधनो सहित सभी व्यवस्था स्वयं करता है। विगत चार दशको मे अर्थव्यवस्था मे मजबूत बनाने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। देश के आर्थिक विकास के लिए जिन प्रमुख संस्थाओ की आवश्यकता महसूस की गई उसमें सहकारी समिति प्रमुख हैं। इन प्राथमिक साख सहकारी समितियो के माध्यम से ही छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित कृषको को कृषि कार्य हेतू कृषि आदान उपलब्ध कराता है। वह कृषको के द्वारा उत्पादित फसल को शासन द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य के अनुसार क्रय करता हैं। छ.ग. में वर्तमान में कुल 1288 समितियां कार्यरत है।

विपणन संघ की संरचना -

छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संध का मुख्यालय वर्तमान मे 880 सिविल लाइन रायपूर में है तथा इसका कार्य क्षेत्र संपूर्ण छ.ग. प्रदेश में है। 16 जिलो के लिये 16 जिला कार्यालय स्थापित है। जिसका प्रमुख जिला विपणन अधिकारी होता है। विपणन संघ की 29 राइस मिले है। छ.ग. राज्य के 16 जिलो के कृषि आदान की समुचित वितरण व्यवस्था के लिये 125 नग्द खाद विक्रय केन्द्र स्थापित है। कृषको को उचित मूल्य एवं उत्तम गुणवत्ता के कृषि आदानो का वितरण 1333 प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियो के माध्यम से किया जाता है। धान की फसल का उचित मूल्य कृषको को दिलाने के लिये विपणन संघ इ रा 1333 सहकारी समितियो के माध्यम से 1532 खरीदी केन्द्रो से शासन द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य के अनुसार धान क्रय किया जाता है।

कृषि का बदलता स्वरूप एवं बढ़ती आवश्यकताऐ तथा विपणन संघ की भूमिका -

वर्तमान समय में कृषि का स्वरूप बदलता जा रहा है। किसान परम्परागत स्रोती के स्थान पर आधुनिक, मशीनो, ट्रैक्टर, डीजल पम्प, हार्वेस्टर आदि का प्रयोग कर रहे है तथा उन्नत किस्म के बीज, रासायनिक खाद व दवाइयो का प्रयोग कर रहे है। साथ ही खाद्य

Volume : 3 | Issue : 6 | June 2013 | ISSN - 2249-555X

फसलो के साथ व्यापारिक फसले गन्ना, पपीता, सोयाबीन, रतनजोत आदि की खेती की जा रही है। ऐसे में किसानो की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है बढ़े हुऐ और बदलती हुई आवश्यकताओ से विपणन संघ की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो गई है। और संघ अपने बढ़ते महत्व को ध्यान में रखते हुए कार्य का विस्तार कर रहा है।

तालिका क्र. 1
वर्षवार विपणन संघ की रासायनिक खाद व बीज के विक्रय की जानकारी (राशि करोड़ो मे)

सत्र	लक्ष्य	पूर्ति	प्रतिशत
2007-08	390.28	287.96	73.78%
2008-09	334.23	399.37	119.49%
2009-10	334.00	351.78	105.32%
2010-11	466.24	416.42	89.31%
2011-12*	460.77	529.23*	114.86%*
योग 1985.52		1984.76	99.96%

स्त्रोत :- वार्षिक प्रतिवेदन , छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ रायपुर
*आकड़े 31.12.2012 तक के अवधि का लिया गया है।

तालिका क्रमांक - 1 से स्पष्ट है कि विपणन संघ की रासायनिक खाद व बीज के विक्रय का प्रतिशत वर्ष 2007-08 में 73.78% व वर्ष 2010-11 में 89.31% रही अर्थात उक्त वर्षो में लक्ष्य की अपेक्षा पूर्ति कम हुई। वही वर्ष 2008-09 व 2009-10 तथा 2011-12 (31.12.2012) में लक्ष्य से अधिक सफलता प्राप्त हुई प्रतिशत क्रमशः 119.49%, 105. 32:, तथा 114.86: रही है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गत 5 वर्षो में खाद व बीज का वितरण प्रत्येक वर्ष सफलता पूर्वक किया जा रहा है।

तालिका क्र. 2
विगत वर्षो में विपणन संघ द्वारा समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन का विवरण (राशि करोड़ो मे)

सत्र	लक्ष्य	पूर्ति	प्रतिशत
2007-08	3568.80	2234.85	62.62%
2008-09	3202.05	3794.12	118.49%
2009-10	5277.75	4253.02	80.58%
2010-11	4680.00	7301.32	156.01%
2011-12*	5310.00	3512.00*	66.14%*
योग 22038.60		21095.31	95.72%

स्त्रोत :- वार्षिक प्रतिवेदन , छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ रायपुर
*आकड़े 31.12.2012 तक के अवधि का लिया गया है।

तालिका क्रमांकः-2 से स्पष्ट है कि विपणन संघ द्वारा समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन का लक्ष्य पर पूर्ति का प्रतिशत अध्ययन अवधि में क्रमशः वर्ष 2007-08 में 62.62% वर्ष 2009-10 में 80.58% तथा वर्ष 2011-12 में 66.14% है अर्थात इन वर्षो में लक्ष्य से कम धान का उपार्जन हुआ है। वर्ष 2008-09 व वर्ष 2010-11 में ये प्रतिशत क्रमशः 118.49% व 156.01% रहा जो कि लक्ष्य से अधिक धान के उपार्जन को स्पष्ट करता है।

तालिका क्र. 3
वर्षवार विपणन संघ के द्वारा पशु आहार की विक्रय स्थिति निम्नानुसार है (राशि करोड़ो मे)

सत्र	लक्ष्य	पूर्ति	प्रतिशत
2007-08	3.93	2.79	70.99%
2008-09	6.87	3.8	55.31%
2009-10	3.54	3.50	98.87%
2010-11	3.67	6.79	185.01%
2011-12	4.43	3.84*	86.68%
योग 22.44	20.72	92.34%	

स्त्रोत :- वार्षिक प्रतिवेदन , छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ रायपुर
* आकड़े 31.12.2012 तक के अवधि का लिया गया है।

तालिका क्रमांक -3 से स्पष्ट है कि विपणन संघ के द्वारा पशु आहार की विक्रय वर्ष 2010-11 में 185.01% रही जो कि लक्ष्य से अधिक वितरण को प्रदर्शित करता है तथा शेष वर्षो में क्रमशः 2007-08 में 50.99%, 2008-09 में 55.31% वर्ष 2009-2010 में 98.68% तथा वर्ष 2011-12 (31.12.2012)86.68% रही है। अतः संस्था इन वर्षो में लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाई है किन्तु विपणन संघ के द्वारा पशु आहार की विक्रय उक्त वर्षो में संतोष जनक रही है।

निष्कर्ष -
संघ द्वारा किये जा रहे तीन प्रमुख कार्यो. 1. खाद व बीज का वितरण। 2. समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन व 3. पशु आहार की बिक्री में से गत पांच वर्षो के आकड़ो के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि रासायनिक खाद व बीज के बिक्रय की लक्ष्य पूर्ति 99.96: जबकि समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के लक्ष्य की पूर्ति 95.22% रहा तथा पशु आहार विक्रय के लक्ष्य की पूर्ति 92.34% रहा है। शत प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति न होने के बावजूद भी संघ का कार्य संतोषजनक कहा जा सकता है क्योंकि मांग की कमी, प्राकृतिक कारण, उत्पादन में कमी, खुले बाजार का प्रभाव आदि पर निर्भर करता है।

लोगों में जागरूकता उत्पन्न कर व मैदानी स्तर पर कार्य प्रणाली में कसावट व सुधार लाकर लक्ष्य की पूर्ति की जा सकती है व अधिकाधिक कृषको को इस से लाभान्वित किया जा सकता है।

सुझाव -
1. विपणन संघ के माध्यम से अधिक से अधिक सदस्यों को जोड़कर लाभान्वित किया जाना चाहिए।
2. संघ के प्राथमिक समितियों के माध्यम से किए जा रहे कार्यो को विस्तारित करना चाहिए।
3. ग्रामीण कृषकों को जागरूक किया जाना चाहिए जिससे वे बाजार में शोषित न हो।
4. समय पर खाद बीज की पूर्ति कराना व समय पर धान उपार्जन की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

REFERENCE
1. वार्षिक प्रतिवेदन, छ.ग. राज्य सहकारी विपणन संघ। ग्न 2. भारतीय बैंकिग की आधुनिक प्रवृतियॉ- सुबर सिंह ग्न 3. छत्तीसगढ राज्य सहकारी बैंक-दशा व दिशा- डॉ. एच.पी. सिंग सलूजा, डॉ. रविश सोनी ग्न 4. जिला सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के कार्यो का मूल्यांकन- डॉ. एच.पी. सिंग सलूजा, डॉ. रविश सोनी ग्न ग्न च्तवणि भ्तरपदकंत चंसै पदहीं सनरंए च्तवमिेवत ए ळवअज टण ल्ण्ज ।नजवए च्ळ ब्वससमहम क्नतहए बींजजपेहंतीए प्दकपं ग्न कींतउमदकतंै पदहीए ।ेजण च्तवमिेवतए ळवअज त्ण्ज्ण्क्ैण् बवससमहम गींपतंहंतीए बींजजपेहंतीए प्दकपं ग्न क्तण तंअपी ज्ञनउंतै वदपए ।ेजण च्तवमिेवतए ज्ञंसलंद च्ळण् ब्वससमहम ए ठीपसंपए बींजजपेहंतीए प्दकपं ग्न क्तण भ्तरपजै पदही ठींजपंए च्तवमिेवतए ळवअजण क्पहअपरंल ब्वससमहम ंरदंदहवंदए बींजजपेहंतीए प्दकपं ग्न